Political system Analysis Approach

व्यवस्था विश्लेषण सिद्धान्त आधुनिक तुलनात्मक राजनीति की वैज्ञानिकता, व्यापकता और गैंभीरता की खोज का अप्रतिम उदाहरण है। तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था सिद्धान्त की सार्थकता इस बात में है कि यह राजनीतिक जीवन की व्यापकता और गहराई को समझने के लिए परम्परागत राजनीति के संकीर्ण दायरे से निकलकर विज्ञानों की खोजों से प्राप्त निष्कर्षों को भी औजारों के रूप में इस्तेमाल करता है।

अब प्रश्न उठता है कि राजनीति व्यवस्था क्या है? इसके लिए सर्वप्रथम 'व्यवस्था' शब्द का अर्थ समझना होगा। शाब्दिक परिभाषा के अनुसार 'व्यवस्था' का अर्थ है – "जटिल सम्बन्धित वस्तुओं का समग्र समूह, विधि संगठन, पद्धति के निश्चित सिद्धान्त तथा वर्गीकरण का सिद्धान्त।" यदि किसी भी स्थान पर हमें संगठन मिलता है, अथवा जहाँ से संगठित होने के गुण पाये जाते हैं और उसके सभी अंग एक दूसरे से ~~सम्बद्ध~~ सम्बद्ध हैं तो वहाँ व्यवस्था विद्यमान है। इसमें तीन गुण पाये जाते हैं –

(i) व्यापकता – व्यवस्था के अन्तर्गत न केवल उन अंगो को शामिल करते हैं जो विधि पर आधारित है जैसे, व्यवस्थापिका, कार्यपालिका आदि वरन समस्त संरचनाओं को उनके राजनीतिक रूप में शामिल करते हैं; जैसे जाति, धर्म, परिवार आदि।

(ii) अन्योन्याश्रय – अन्योन्याश्रय का अर्थ है: एक दूसरे पर आश्रित होना या एक दूसरे को प्रभावित करना। जब व्यवस्था के एक अंग के गुणों में परिवर्तन आता है तो उसका प्रभाव अन्य संघटकों पर भी स्वतः पड़ता है।

(iii) सीमाएँ – सीमाओं से तात्पर्य यह है कि ऐसा बिन्दु जहाँ पर अन्य व्यवस्थाओं की परिधि समाप्त होती है और राजनीतिक व्यवस्था की परिधि प्रारम्भ होती है, उसे राजनीतिक व्यवस्था की सीमा कहते हैं।

राजनीति व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से अलग और पूर्ण नहीं है क्योंकि या राजनीतिक आचरण न केवल उसके राजनीतिक मूल्यों अथवा मान्यताओं

Ajanta Officer

Scanned with CamScanner

से प्रभावित होता है बल्कि एक से अधिक, क्योंकि सामाजिक आर्थिक क्रियाओं तथा सांस्कृतिक अभिवृत्तियों से भी प्रभावित होता है।

स्पष्ट है कि राजनीतिक व्यवस्था एक ऐसी उप-व्यवस्था है जिसके विभिन्न भागों में ऐसी सम्बन्ध सूत्रता होती है कि व्यवस्था के किसी भाग में हुआ कोई भी परिवर्तन अन्य अन्तः क्रियाशील अंगों तथा सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था में भी अनुकूल परिवर्तन ला देता है।

आमण्ड ने राजनीतिक व्यवस्था की पाँच ~~विशेष~~ विशेषताएँ बताती है-

(i) राजनीतिक व्यवस्थाओं की सार्वभौमिकता
(ii) राजनीतिक संरचनाओं की सार्वभौमिकता
(iii) राजनीतिक कार्यों की सार्वभौमिकता
(iv) राजनीतिक संरचना की बहुकार्यता और
(v) राजनीतिक व्यवस्थाओं का सांस्कृतिक दृष्टि से ~~मिश्रता~~ मिश्रित रूप।

विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाएँ वास्तविक जीवन में प्रायः एक जैसा व्यवहार करती है। अतः राजनीतिक व्यवस्थाओं में पायी जानेवाली समान विशेषताएँ इस प्रकार है-

1. राजनीतिक संरचनाओं की समानता - सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक संरचनाएँ पायी जाती है। इन संरचनाओं की परस्पर तुलना की जा सकती है। इन संरचनाओं में अन्तर केवल विशिष्टीकरण का होता है।

2. कार्यों की सर्वव्यापकता - संरचना के आधार पर राजनीतिक व्यवस्था की तुलना करने पर हम सही परिणाम नहीं पाते हैं। इसलिए संरचना की अपेक्षा कार्यों को अधिक महत्व देना चाहिए। हित समूह के संगठन और सदस्यता की अपेक्षा यह जानना अधिक उपयुक्त होता है कि हितों ~~की~~ को कैसे स्पष्ट किया जाता है? कौन से संगठन इस कार्य में भाग लेते है और किस प्रकार के हितों को स्पष्ट करते है।

3. राजनीतिक संरचना की विविधता - सभी राजनीतिक व्यवस्थाएं विविध कार्य करती है। विधायिका सामान्यतः विधायिका कानून बनाती है, कार्यपालिका उसे लागू करती है तथा न्यायपालिका उसकी व्याख्या करती है। परन्तु वास्तविकता यह है कि तीनों विभाग एक दूसरे के कार्य को करते है। विधायिका विधि निर्माण के साथ-साथ प्रशासनिक और न्यायिक कार्य भी करता है। नौकरशाही न केवल कानूनों को लागू करती है, बल्कि विधि निर्माण का एक बहुत बड़ा स्रोत है।

4. राजनीतिक संस्थाओं का मिश्रित रूप - कोई भी राजनीतिक व्यवस्था विशुद्ध नहीं होती। सभी राजनीतिक व्यवस्थाएं मिश्रित व्यवस्थाएं है। राजनीतिक व्यवस्था परम्परागत तथा आधुनिक दोनों प्रकार के विचारों और संस्थाओं का रूप होती है।

5. राजनीतिक साधनों पर असमान स्वामित्व - प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक साधनों का असमान वितरण होता है। राजनीतिक साधनों से अभिप्राय उन साधनों से है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आचरणों को प्रभावित करता है।

6. राजनीतिक प्रभाव का प्रयत्न - प्रशासकीय नीतियों, निर्णयों और निर्णयों को प्रभावित करने की क्षमता का नाम राजनीतिक प्रभाव है। राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत कुछ लोग सरकार की नीतियों और निर्णयों को प्रभावित करने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहते है।

7. राजनीतिक प्रभाव का असमान वितरण - राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत राजनीतिक प्रभाव का असमान वितरण का प्रमुख कारण साधनों का असमान वितरण है। कुछ व्यक्तियों के पास राजनीतिक साधन होते है, वे सरकार को अधिक प्रभावित कर सकते है और राजनीतिक साधनों पर नियंत्रण कर सकते है।

8. वैधता का अर्जन - राजनीतिक व्यवस्था के नेता सभी राजनीतिक व्यवस्था में अपने कार्यों को वैध बताने का प्रयास करते है। नेता यह प्रयत्न करते है कि जब संघर्ष को निपटने के लिए सरकारी

Scanned with CamScanner

साधनों का प्रयोग किया जाए तो उन नियमों का पालन जनता में केवल हिंसा, दण्ड आदि की भावना से करे बल्कि इस भावना से भी करे कि वह नैतिक रूप से सही है और उसका पालन करना उचित है।

9. विचारधारा का विकास - विचारधारा राजनीतिक व्यवस्था को औचित्य प्रदान करती है। नेता विचारधारा का विकास इसलिए करते हैं कि ताकि उनके नेतृत्व को वैधता प्राप्त हो सके अथवा वे अपने प्रभाव को प्राधिकार में परिवर्तित कर सके।